Faculty Name – **Dr. Kavita Sharma (GF JU)**
Department – Ancient Indian History Culture & Archaeology
Class – **M.A. 2nd Semester** (एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर)
Subject – Historiography, Concepts And Methods
(इतिहास –लेखन, धारणाएं तथा पद्धतियां)

युनिट 4 –

आधुनिक भारतीय इतिहासकार –

जदुनाथ सरकार (1870–1958)

एक असाधारण रूप से प्रतिभा सम्पन्न छात्र जदुनाथ सरकार ने अंग्रेजी और इतिहास विषयों में प्रतिष्ठा (ऑनर्स) की डिग्री हासिल की और 1892 में अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की। सन् 1893 से 1926 तक वे अंग्रेजी एवं इतिहास विषय के शिक्षक थे। दो वर्ष तक वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति के पद पर आसीन रहे। उन्होंने दूसरी बार के कार्यकाल के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया क्योंकि उक्त पद उनके ऐतिहासिक शोध के लिये बाधा बन रहा था।

–: जदुनाथ सरकार की मुख्य कृतियाँ :–

भारतीय इतिहास में सरकार ने सबसे अधिक लिखा एवं लगभग 50 अत्यंत उत्कृष्ट कृतियों का प्रणयन किया। यहां जिन कृतियों का उल्लेख किया गया है वे उनकी महानतम रचनाओं में से केवल कुछ नाम हैं। *इंडिया ऑफ औरंगजेब, इट्स टोपोग्राफी, स्टेटिस्टिक्स एंड रोड्स* (1901), सामान्य अर्थ में इतिहास की पुस्तक नहीं थी बल्कि देश के भौतिक पक्षों का विवरण थी। 1912 और 1924 के मध्य समग्र रूप से लिखी गयी *हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब* उनकी सबसे प्रमुख कृति थी। विलक्षण कुशाग्रता वाले एवं असाधारण मेहनत करने में समर्थ सरकार ने इस कठिन विषय को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया और रूढ़िवादी बादशाह के जटिल व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। चमत्कारिता सघनता और महत्ता वाली पुस्तक हिस्ट्री पाठकों को उत्तराधिकार के युद्ध, औरंगजेब के प्रशासन के सिद्धान्तों एवं नीतियों, भारत में इस्लामी धर्मकेन्द्र–राज्य, शंभाजी की त्रासद मृत्यू, बीजापुर और गोलकोंडा पर मुगलों के आधिपत्य, दक्कन से पच्चीस वर्षों तक औरंगजेब की अनुपस्थिती के दौरान उत्तर भारत में उत्पन्न अराजकता और अशांति तथा बादशाह की मृत्यू से गहराई से अवगत कराती है। इस पुस्तक का समापन सरकार द्वारा भारत की आर्थिक दशा और नियति पर औरंगजेब के लम्बे शासन काल के प्रभाव के मूल्यांकन के साथ होता है। इस बीच सरकार की एक अन्य किताब *शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स* (1919) में प्रकाशित हुयी। उनकी पुस्तक *हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब* के तीसरे खण्ड ने देश के मुस्लिम हलकों में एक आवेश उत्पन्न कर दिय। इसी तरह शिवाजी ने महाराष्ट्र के लोगों में असंतोष एवं आक्रोश उत्पन्न कर दिया।

सरकार की पुस्तक ने यह दर्शाया की यद्यपि मराठा नायक को शानदार सफलता मिली किन्तु वे एक राष्ट्र का निर्माण करने में विफल रहे और उनकी अधिकांश संस्थाएं पूरी तरह

Dr Kavita Sharma

मौलिक नहीं थी। ये ठोस प्रमाणों पर आधारित धारणाएं राष्ट्रवादी इतिहासकारों के सिद्धातों और स्वयं ऐतिहासिक नायक के लिये क्षतिकारी सिद्ध हुईं। सन् 1922 में सरकार ने परवर्ती मुगलों पर विलियम इर्विन की अधूरी पुस्तक को संपादित किया और इतिहास 1738 से आरम्भ किया जहां इर्विन ने अपना लेखन बंद कर दिया था। उन्होंने नादिर शाह 1922 और एक अन्य अत्यंत महत्वपूर्ण कृति *द फॉल ऑफ द मुगल एंपायर* (1932–1950) के रूप में इर्विन के कार्य को पूरा किया। सन् 1739 में नादिर शाह के प्रस्थान से शुरू होकर *द फॉल ऑफ द मुगल* एंपायर के चार खण्डों का समापन 1803 में अग्रेंजों द्वारा दिल्ली एवं आगरा के विजय के साथ होता है। सरकार की पुस्तक *मिलिटरी हिस्ट्री ऑफ इंडिया* 1960 में उनके मरणोपरांत प्रकाशित हुयी।

सरकार की रचनाएं विशिष्ट संलक्षण मूल विचार, कथ्य और प्रस्तुति का ऐक्य है। वे पाठक को प्रत्यक्ष, सहजता से प्रवाहमान भाषा में विचारों का संप्रेषण करते हैं।

सरकार के विभिन्न भाषाओं में लिखे गये पत्रों तथा डायरियों के साथ–साथ सभी मौलिक समकालीन स्रोत सामग्रियों पर बल दिया। रैंक की तरह उन्होंने बिल्कुल मौलिक दस्तावेजों की व्यापक खोजबीन का तरीका अपनाया। किन्तु उनकी लम्बी अैर कठोर अनुशासनबद्ध शोध यात्राओं का एक और साध्य था। केवल लिखित विवरणों पर निर्भरता से स्वयं को मुक्त रखने के लिए वे अपने अध्ययनों के विषय से सम्बद्ध ऐतिहासिक स्थल का दौरा करते जिससे कि वहां के भौगोलिक स्वरूप तथा क्षेत्र से वे स्वयं को अवगत कर सकें। सरकार जनसाधारण के जीवन का बहुत निकटता से अवलोंकन करते और कई–कई माह तक, जैसा कि उन्होंने महाराष्ट्र मे किया था कि लोगों के सम्पर्क में रहते ताकि उनसे सीधे तौर पर बातचीत कर सकें और उनके चरित्र में अंतर्दृष्टि विकसित कर पाएं। उन्होंने एक श्रद्धालू के रूप में नहीं बल्कि जनसाधारण के धार्मिक एवं सांप्रदायिक जीवन का अध्ययन करने की गहरी उत्सुकता रखने वाले एक विद्धान के रूप में धर्मस्थलों की यात्रा की। उन्होंने मुगल काल के प्रत्येक किले, घाटी एवं युद्ध की गहनता से पड़ताल की। समकालीन स्रोंतो के संकलन की गहनता के साथ–साथ उनकी सत्यता की पुष्टि के लिए वैज्ञानिक छानबीन की पद्धति अपनाई। और इस प्रकार से पाठ्य केंद्रित आलोचना की आधुनिक पद्धति अपनाई। सरकार ने बकवासों एवं बकवास करने वालों पर कठोर प्रहार किया। उन्होंने मराठी बाखरों और राजस्थानी गद्य पद्य रचनाओं में अफीमची का गल्प कहकर तीव्र भर्त्सना की। सरकार ने अपने कार्य किसी भी अंश को देश, प्रजाति, धर्म परिवार आदि की संकीर्ण मान्यताओं और पूर्वाग्रहों से दूर रखा।

Dr Kavita Sharma

आलोचनाएं

सरकार के प्रशांसकों के साथ साथ आलोचकों भी थे हांलाकि उनमें से कोई उनके ऐतिहासिक, प्रतिमानों के तथ्यात्मक आधार का खंडन नहीं कर पाया और न ही उन पर तथ्यों को तोड़ मरोड़कर पेश करने का आरोप लगा सका। गैर जिम्मेदार आलोचकों को छोड़ दे ंतो ए.एल. श्रीवास्तव आलोचना के तीन दृष्टांतों का उल्लेख करते हैं और यह बताते हैं कि तथ्यों के प्रकट होने पर किस तरह आलोचक चुप्पी साथ गए।

1. औरंगजेब की धार्मिक नीति का मूल्यांकन करते हुये सरकार ने बादशाह के बनारस फरमान का उल्लेख नहीं किया जिसमें उसने विश्वनाथ मंदिर को भूमि अनुदान दिया। सरकार ने यह जवाब दिया कि औरंगजेब ने उत्तराधिकार के युद्ध के दौरान वह खास फरमान जारी किया जब उसे शुजा को पकड़ने के लिये हिन्दूओं की सहायता की आवश्यकता थी और हिन्दू धार्मिक संस्थाओं को संरक्षण प्रदान करने की उनकी तथाकथित आकांक्षा से इसका कोई लेना देना नहीं था।

2. एक अन्य आलोचना यह थी कि शिवाजी द्वारा अफजल खां की हत्या को सरकार द्वारा आत्मरक्षा के लिये की गयी हत्या माने जाने का कोई निर्णायक प्रमाण नहीं है। इतिहास कार ने उत्तर में कहा कि अफजल खां शिवाजी को पकड़ने और अपने कमरबंद की कटार से उस पर पहला आक्रमण करने का दोषी माना। इसकी पुष्टि अहमदनगर निजाम उल–मुल्क के प्रसिद्ध मीर आलम जो एक इतिहासकार भी थे के द्वारा की गयी है।

3. सरकार द्वारा प्रस्तुत जजिया द्वारा व्याख्या को उचित नहीं माना गया किन्तु सरकार ने वस्तुतः इसकी अपनी कोई व्याख्या नहीं की बल्कि समकालीन मुसलमान न्यायविदों द्वारा सहमति से प्रस्तुत निर्णयात्मक विचारों या धारणाओं को सार रूप में सबके सामने रखा। इस्लाम के विरूद्ध पूर्वाग्रह का जो आरोप सरकार के ऊपर लगाया गया है उसका जबाव ऑक्सफर्ड के सी. सी. डेविस ने फॉल ऑफ द मुगल एंम्पायर के प्रथम खण्ड की समीक्षा करते हुये दिया।

जगुनाथ सरकार की तुलना *रैंक एवं मॉमसेन* से की जा सकती है। वे निस्संदेह अपने काल के सबसे महान भारतीय इतिहासकार और विश्व के सबसे बड़े इतिहासकारों में से एक थे। उनके सशक्त व्यक्तित्व और विद्वतापूर्ण कार्यों ने ईमानदार और शोधपूर्ण इतिहासलेखन की एक परम्परा कायम की।

Dr Kavita Sharma